4 ऋतुवर्णनम्

वर्षा

स्वनैर्घनानां प्लवगाः प्रबुद्धा विहाय निद्रां चिरसन्निरुद्धाम्।
अनेकरूपाकृतिवर्णनादाः नवाम्बुधाराभिहता नदन्ति।।१।।
मत्ता गजेन्द्राः मुदिता गवेन्द्राः वनेषु विक्रान्ततरा मृगेन्द्राः।
रम्या नगेन्द्राः निभृता नरेन्द्राः प्रक्रीडितो वारिधरैः सुरेन्द्रः।।२।।
वर्षप्रवेगाः विपुलाः पतन्ति प्रवान्ति वाताः समुदीर्णवेगाः।
प्रनष्टकूलाः प्रवहन्ति शीघ्रं नद्यो जलं विप्रतिपन्नमार्गाः।।३।।
घनोपगूढं गगनं न तारा न भास्करो दर्शनमभ्युपैति।
नवैर्जलौघैर्धरणी वितृप्ता तमोविलिप्ता न दिशः प्रकाशाः।।४।।
महान्ति कूटानि महीधराणां धाराविधौतान्यधिकं विभान्ति।
महाप्रमाणैर्विपुलैः प्रपातैर्मुक्ताकलापैरिव लम्बमानैः।।५।।

हेमन्तः

अत्यन्त-सुख-सञ्चारा मध्याह्ने स्पर्शतः सुखाः।
दिवसाः सुभगादित्याः छायासलिलदुर्भगाः।।६।।
खर्जूरपुष्पाकृतिभिः शिरोभिः पूर्णतण्डुलैः।
शोभन्ते किञ्चिदालम्बाः शालयः कनकप्रभाः।।७।।
एते हि समुपासीना विहगा जलचारिणः।
नावगाहन्ति सलिलमप्रगल्भा इवाहवम्।।८।।
अवश्यायतमोनद्धा नीहारतमसावृताः ।
प्रसुप्ता इव लक्ष्यन्ते विपुष्पा वनराजयः।।९।।

वसन्तः

सुखानिलोऽयं सौमित्रे कालः प्रचुरमन्मथः।
गन्धवान सुरभिर्मासो जातपुष्पफलद्रुमः।।१०।।
पश्य रूपाणि सौमित्रे वनानां पुष्पशालिनाम्।
सृजतां पुष्पवर्षाणि वर्षं तोयमुचामिव।।११।।
प्रस्तरेषु च रम्येषु विविधाः काननद्रुमाः।
वायुवेगप्रचलिताः पुष्पैरवकिरन्ति गाम्।।१२।।
अमी पवनविक्षिप्ता विनदन्तीव पादपाः।
षट्पदैरनुकूजद्भिः वनेषु मदगन्धिषु।।१३।।
सुपुष्पितांस्तु पश्यैतान् कर्णिकारान् समन्ततः।
हाटकप्रतिसंछन्नान् नरान् पीताम्बरानिव।।१४।।

(वाल्मीकिरामायण)

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

१. वर्षर्तौ गगनं कीदृशं भवति?
२. वर्षर्तौ निद्रां विहाय के नदन्ति?
३. हेमन्ते जलचारिणः जले किं नावगाहन्ति?
४. वसन्तकाले वृक्षाः कीदृशाः भवन्ति? **[2017 MH, 19 CQ, 20 ZG]**
५. काननद्रुमाः गां पुष्पैः कदा अवकिरन्ति?
६. हेमन्ते वृक्षाः लताश्च प्रसुप्ता इव कथं प्रतीयन्ते?
७. वसन्तर्तौ पुष्पिता कर्णिकाराः कीदृशाः प्रतीयन्ते।
८. वर्षाकाले पर्वतशिखराणि कैः तुलितानि?
९. हेमन्ते विपुष्पा वनराजयः कथं प्रतीयन्ते।
१०. कः कालः प्रचुरमन्मथः भवति? **[2017 MU]**
११. हेमन्तर्तौ दिवसाः कीदृशाः भवन्ति?

अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–

(क) स्वनैर्घनानां ..... नदन्ति। **[2019 CO]**
(ख) अमी ..... मदगन्धिषु। **[2016 SK, 20 ZF]**
(ग) वर्षप्रवेगाः ..... विप्रतिपन्नमार्गाः।

(घ) अत्यन्त ..... दुर्भगाः।
(ङ) खर्जूर ..... कनकप्रभाः। **[2017 MN]**
(च) एते हि ..... इवाहवम्।
(छ) पश्य ..... तोयमुचामिव। **[2016 SJ, 19 CM, CP]**
(ज) प्रस्तरेषु ..... गाम्। **[2019 CM]**
(झ) घनोपगूढं ..... लम्बमानैः।
(ञ) सुखानिलोऽयं ..... फलद्रुमः। **[2020 ZC, ZD, ZE, ZF]**
(ट) मत्ता गजेन्द्रा ..... वारिधरैः सुरेन्द्रः। **[2018 AH]**

२. **निम्नलिखित सूक्तिपरक वाक्य की ससन्दर्भ हिन्दी-व्याख्या कीजिए–**
प्रक्रीडितो वारिधरैः सुरेन्द्रः।

३. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**
(क) मेंढक बोल रहे हैं।
(ख) तेज वायु बह रही है।
(ग) इन्द्र बादलों से खेल रहे हैं।

व्याकरणात्मक प्रश्न

१ **निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए–**
नगेन्द्राः, घनोपगूढ़म, जलौघैः।

२. **निम्नलिखित शब्दों में शब्द, विभक्ति एवं वचन बताइए–**
सौमित्रे, वनानाम्, रम्येषु, नरान्।

३. **निम्न शब्दों में धातु, लकार, पुरुष एवं वचन बताइए–**
पश्य, प्रवहन्ति, नदन्ति।

४. **निम्न शब्दों में धातु एवं प्रत्यय बताइए–**
वितृप्ता, प्रबुद्धा।

शब्दार्थ

स्वनैः = ध्वनि से। **प्लवगाः** = मेंढक। **गवेन्द्रा** = साँड़। **प्रनष्टकूलाः** = किनारे तोड़ कर। **सुभगाः** = सुखद। **दुर्भगाः** = कष्टप्रद। **अप्रगल्भाः** = कायर (युद्ध विद्या में अनिपुण)। **आहव** = युद्ध-भूमि। **कर्णिकारान्** = कनेर। **अवश्याय** = ओस। **नीहार** = कुहरा। **तोयमुचाम्र्**= बादलों के। **प्रस्तरेषु** = पत्थरों में। **गाम** = भूमि को। **मदगन्धिषु** = मोहक सुगन्धवाले। **पवनविक्षिप्ताः** = वायु के द्वारा हिलाये गये। **विनदन्तीव** = (विनदन्ति + इव) बोल-से रहे हैं। **षट्पदैरनुकूजद्भिः** = (षट्पदैः + अनुकूजद्भिः) गूँजते हुए भौंरों से।